

# सूर्य देव की आरती: ॐ जय सूर्य भगवान

पद 1

ॐ जय सूर्य भगवान, जय हो दिनकर भगवान।  
जगत् के नेत्रस्वरूपा, तुम हो त्रिगुण स्वरूपा।  
धरत सब ही तव ध्यान, ॐ जय सूर्य भगवान॥

पद 2

सारथी अरुण हैं प्रभु तुम, श्वेत कमलधारी। तुम चार  
भुजाधारी॥  
अश्व हैं सात तुम्हारे, कोटि किरण पसारे। तुम हो देव  
महान॥

पद 3

ऊषाकाल में जब तुम, उदयाचल आते। सब तब दर्शन  
पाते॥  
फैलाते उजियारा, जागता तब जग सारा। करे सब तब  
गुणगान॥

पद 4

संध्या में भुवनेश्वर, अस्ताचल जाते। गोधन तब घर  
आते॥  
गोधूलि बेला में, हर घर हर आंगन में। हो तव महिमा  
गान॥

पद 5

देव-दनुज नर-नारी, ऋषि-मुनिवर भजते। आदित्य  
हृदय जपते॥  
स्तोत्र ये मंगलकारी, इसकी है रचना न्यारी। दे नव  
जीवनदान॥

पद 6

तुम हो त्रिकाल रचयिता, तुम जग के आधार। महिमा  
तब अपरम्पार॥  
प्राणों का सिंचन करके, भक्तों को अपने देते। बल,  
बुद्धि और ज्ञान॥

पद 7

भूचर जलचर खेचर, सबके हो प्राण तुम्हीं। सब जीवों  
के प्राण तुम्हीं॥  
वेद-पुराण बखाने, धर्म सभी तुम्हें माने। तुम ही  
सर्वशक्तिमान॥

पद 8

पूजन करतीं दिशाएं, पूजे दश दिक्पाल। तुम भुवनों के  
प्रतिपाल॥  
ऋतुएं तुम्हारी दासी, तुम शाश्वत अविनाशी। शुभकारी  
अंशुमान॥